

ॐ

वनसीत ॥ ॥ एतसवसिमानं-कृष्णकः शुभिक्षानि नः मातृकृष्णकानंदसिः पञ्चतः मूर्खेन
ननं पञ्चतः पुत्रवृषः वनयानकमजीवः मूर्खे कृष्णकानंदसिः ॥ १२ ॥ नहिकर्मासिवत्वात्रि
स-ध्या कात्रययात्रयः। आहात्रमेधूननिजाः गथास्वाध्यायमवत ॥ ॥ पञ्चता ४ कर्म
सुधिसमभवः नयः मिथूनयायः द्वाउवयकः दनः मलपदयः पञ्च ५ तामनं व ॥ ४० ॥
आहात्रजायनयाधिः गहोकुल ग्यजायन। ब्रूलक्ष्मीक ग्यसर्कायाः स्वाभदायूरयदय
॥ ॥ सनिसननसाः याधिदयूः मिथूनयायनसाकूयूरुजायलधिवः द्वाउवयकसादनसाल

श्री मायः ॥ श्री मायागता आयु माय ॥ ७१ ॥ वउ व ग र्थ त ल हः ॥ रुप हा म य ताय न । अ नी र्वा द
 य ना नि र्वाः ॥ व ना र्वा दू ना दि न ॥ ॥ ग्य न वः ॥ वा दू द लः ॥ वउ व ज हः ॥ न ल स वः ॥ अ मि र्वा
 वि य दू वः ॥ थ र्थि ग व दू द लः ॥ ना र्वा र्वाः ॥ य ना दि न या य ॥ ७२ ॥ वा दू ॥ वि ॥ अ म दि या न
 ॥ कि उ क र्मा वि व डि न ॥ वि धू न व य नि र्वा मिः ॥ स म इ ॥ र व स म शु र्वा ॥ ॥ अ निः ॥ काम ल
 कि उ व व न म ह्ना कः ॥ वि य स र्वा गी दू ॥ र व शु व ठ ल र व रुः ॥ थ र्थी ना र्वा था य ॥ ७३ ॥ क ल नी ल रु
 ॥ वा य न ॥ स र्वा ध र्मा य ना य न ॥ अ वि न ॥ य ग ला द कः ॥ ना र्वा ध र्मा दि धी य न ॥ ॥ क ल